परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है;...सम्यग्दर्शन होता है।टेक।।

वास जिनका वन उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमे।।१।।

कंचन अरु कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी ध्यानी।
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भंडारी।।२।।

परम पावन मुनिवरों के पावन चरणों में नमूँ।
शान्त मूर्ति सौम्य मुद्रा आतम आनन्द में रमूँ।।३।।

चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की।
चाह हृदय में एक यही है, मुक्ति वधू को वरने की।।४।।

भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं।
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बाते करते हैं।।५।।